



नरोत्तमदास कृत सुदामा
चरित कृष्ण—सुदामा की
घनिष्ठ मित्रता का वर्णन
करता है ।

सुदामा को देखते ही कृष्ण उन्हें गले से लगा
लेते हैं।



पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों
पग धोए ।।



उनके पाँव धोने के लिए परात के जल को हाथ भी नहीं
लगाया और नैनों के जल से ही पाँव धो दिए

घर—घर कर ओड़त फिरे, तनक
दही के काज ।

